Val II, Issue:VIII, Sept 2012

ISSN : 2230-7850

Indian Streams Research Journal

Impact Factor 0.2105

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N. Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 8, Sept 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

नवें दशक की हिन्दी कहानियों में मूल्य विघटन

Saritha.K

**Ph.D. Research Scholar,
Department of Hindi,
Pondicherry Central University
Puducherry - 14.**

संक्षिप्त रूप :–

समाज के सम्यक संचालन के लिए मनुष्य ने कुछ मान्यताएँ निर्धारित की है, जिन्हें 'मूल्य' कहा जाता है। मानव बिना मूल्यों के सार्थक और संतुष्ट जीवन नहीं जी सकता। इसलिए मूल्यों के बीज मानव के मन में मौजूद रहना अनिवार्य है। मैं ने इस शोध निबंध में, मानव मूल्यों के आधार पर नवें दशक की हिन्दी कहानियों को विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। नवें दशक की कहानियों में रचनाकारों ने मानव मूल्यों के ह्रास से समाज में उत्पन्न विविध समस्याओं का चित्रण बड़ी तीक्ष्ण रूप से किया है। सच में, ये कहानियाँ आजकल मानव समाज में लुप्त होने वाली इन्सानियत को बनाये रखने के तीव्र साधन हैं।

संशोधन की आवश्यकता :–

इस शोध निबंध में, नवें दशक के अधिकांश कहानिकारों तथा उनकी कहानियों में प्रस्तुत , मूल्य विघटन से संबंधित समस्याओं का अनुशीलन किया गया हैं। मानव मूल्यों के तेज़ी से विघटन होने वाले इस युग में नवें दशक की कहानियाँ, अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी लगता है, क्योंकि विघटित मूल्यों से उत्पन्न अकेलापन, असुरक्षा का भाव, मृत्यु–बोध, संत्रास, ऊब, घुटन आदि से विवश मानव जीवन यथार्थ को, अच्छी तरह जानने–परखने का प्रयास नवें दशक की हिन्दी कहानीकारों ने किए हैं। आज मूल्यों के ह्रास होने के कारण जीवन को नीरसता, यांत्रिकता आदि घेर रहे हैं, इसलिए आजकल विद्वानों के बीच में भी यह बहुत चर्चा का विषय बन गया है। आधुनिक काल में इसी विषय की मौलिकता निर्विवाद है। नवें दशक के कहानीकारों ने मूल्य विघटन की कौन सी समस्याओं को अपनी कहानियों में व्यक्त किया है ?मूल्य विघटन का प्रमुख कारण क्या है ?तथा मूल्य विघटन से समाज में उत्पन्न सबसे बड़ा खतरा कौन सा है ?आदि प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का प्रयास मेरे इस शोध निबंध की मक्सद हैं।

प्राक्कथन :–

भारतीय संस्कृति एक ऐसी संस्कृति है, जिसमें जीवन मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. मोहिनी शर्मा, जीवन मूल्य को संस्कृति के चरम लक्ष्य से जोड़ती हुई कहती हैं–"भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य सत्यम, शिवम, सुन्दरम युक्त मानवीय विचार या चिंतन का निचोड़ ही जीवन मूल्य कहलाता है।"[1] समाज का अस्तित्व ही मूल्यों पर आधारित है। सच कहें तो सिर्फ मूल्य ही मानव जीवन का निर्धारण और संचालन करते हैं। 'मूल्य' शब्द संस्कृत की 'मूल्' धातु में 'यत् प्रत्यय लगाने से बना है। इसका अर्थ कीमत, मज़दूरी आदि होता है, जो युनानी शब्द 'एक्सियस' से बना है। इन अर्थों में आर्थिक तत्व अधिक शामिल हैं। पर साहित्यिक मूल्यों को इन अर्थों में नहीं बल्कि वैयक्तिक, जातीय, समाजशास्त्रीय, नैतिक और दार्शनिक आदि दृष्टि से समझना चाहिए। भारतीय संस्कृति का इतिहास 'वेदों' पर आधारित है। भारतीय परंपरा ने जिन मूल्यों को अपना लिया है उनका आदि श्रोत 'वेद' ही है। वेदों में 'मूल्य' के लिए जिन शब्दों का प्रयोग मिलता है, वे हैं–'ऋत्'और 'सत्य'। डॉ. गुलाबराय के अनुसार –"विश्व का परिचालन करने वाले समष्टि रूप प्राकृतिक नियम अर्थात एकसूत्रीय परमात्म तत्व की अनुभूति ऋत् है।"[2] 'ऋत् 'नित्य और अनादि नियम होने के कारण यह व्यवस्था को बनाता है। ऋत् की ही भूमि पर सत्य की अवधारणा का जन्म होता है। वैदिक वाङ्मय में 'ऋत्' या 'सत्य' की प्राथमिक मूल्य के रूप में प्रतिष्ठा हुई। भारतीय विचारधारा में जीवन मूल्य के रूप में 'पुरुषार्थ' को भी स्वीकारा गया है।

Please cite this Article as :Saritha.K , *नवें दशक की हिन्दी कहानियों में मूल्य विघटन* : Indian Streams Research Journal (Sept. ; 2012)

भारतीय एवं पाश्चात्य चिंतकों ने मूल्य को अनेक कोणों से परिभाषित करने का अपना–अपना प्रयत्न किया है। मूल्यों को अब तक उपलब्ध साधनों के माध्यम से नहीं मापा जा सकता। व्यक्ति के विवेक को मूल्य निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। व्यक्ति जीवन में 'मूल्य' दिशा निर्देशक का काम करता है। इसलिए ही व्यक्ति मूल्यों का निर्माण करते हैं। डॉ.हेमेन्द्र पानेरी ने मूल्यों को विज्ञान सम्मत दृष्टि से परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनकी राय है कि–"व्यक्ति चिंतन से विचार बनते हैं, विचारों से धारणा का जन्म होता है और धारणाओं से मूल्यों का निर्माण।"[3] मूल्य जीवन के प्रति एक अवधारणा एवं दृष्टिकोण है। जीवन की सार्थकता केलिए मानव मूल्य की ज़रूरत है। डॉ.नगेन्द्र ने वस्तु के मानव के लिए उपयोगिता तथा उसके आंतरिक गुण को मूल्य के रूप में महत्व दिया है। मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले सिद्धांत को महादेवी वर्मा मूल्य मानती हैं। सिद्धांत का मतलब है कि, मानव के आदर्शात्मक कृत्य। महादेवी वर्मा की राय में "वास्तव में थोडे से सिद्धांत में जो मनुष्य को मनुष्य बनाते है, हम उन्हीं को जीवन मूल्य कहते हैं।"[4] 'प्लेटो' ने 'सत्' ,'श्रेयस' एवं 'सौंदर्य' के समन्वित रूप को मूल्य स्वीकार किया। अरस्तु ने इसे मान्यता देते हुए 'सत्','श्रेयस' एवं सौंदर्य को अलग–अलग मूल्य स्वीकारा। डब्ल्यू.एम अरबन किसी इच्छा या आवश्यकता के पूरक को मूल्य मानते है। प्रो.मैकेंजी मूल्य को मनुष्य के चिंतन के परिणाम मानते हैं। उनका कहना है–"मूल्य से हमारा आशय उस विचार से है, जो एक विचारशील प्राणी के चिंतन का परिणाम हो ।"[5] मूल्यों के वर्गीकरण के संबंध में भी पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों ने अपना–अपना मत प्रकट किया है। कोई उन्हें बाह्य और आंतरिक मूल्य का नाम देते हैं तो कोई साधनात्मक मूल्य और साध्यात्मक मूल्य, कोई व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्य कहते हैं तो कोई नैतिक और अनैतिक मूल्य का नाम देते हैं। परिस्थिति और युग के अनुरूप मूल्य भी परिवर्तनशील हैं।

मानव मूल्यों का विघटन :–

परिवर्तनों से गुज़रते हुए मानव जीवन में मूल्यों का अर्थ बदल गया है। पुराने मूल्य अप्रासंगिक हो गये हैं। उनकी जगह लेने वाले नए मूल्य अभी संख्या में कम ही हैं। यही मूल्य विघटन की स्थिति है। मूल्य विघटन के कई कारण हैं। इसमें विज्ञान प्रमुख है। यह सच है कि विज्ञान ने हमारी धारणाओं और विश्वासों को हिला दी है। विज्ञान की मदद से हर एक मानव सोच विचार करते हैं और स्वयं बदलने को बाध्य हो जाते हैं। विज्ञान दो स्तरों पर मूल्य विघटन का कारण बन गया है। एक तो विज्ञान का बौद्धिक रूप और दूसरा है यांत्रिकी का निरंतर प्रभाव। विज्ञान ने मानव के रूढिवादि चिंतन रहन–सहन, जीवन दृष्टि आदि को बदल दिया है। विज्ञान ने सबसे बड़ी चुनौती धर्म और आध्यात्म से जुड़े मूल्यों को दी है। अस्तित्ववाद, साम्यवाद आदि विज्ञान से प्रेरित सिद्धांतों ने मानव चिंतन को नयी राह पर लाकर यांत्रिकी ने खड़ा किया। मानव के व्यावहारिक धरातल पर बडा असर ड़ाल दिया। नगरीकरण, आर्थिक प्रतियोगिता, संपत्ति का विकेन्द्रीकरण, तीव्रगामी संचार व्यवस्था और विध्वंसात्मक अस्त्र आदि यांत्रिकी के तत्वों ने मानव जीवन में परिवर्तन लाया। नैतिकता के रूढ़ मानदंडों को भी तीव्र आघात पहुँचा। पारिवारिक संबंध टूटने लगे। पिछले दो विश्व युद्धों में यांत्रिकी के दुरुपयोग से दुनिया भर में अजनबीपन, अकेलापन और अनास्था फैल गये। व्यक्ति जीवन के विभिन्न चरणों से मिलनेवाले अनुभवों से भी मूल्यों के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल गया। इसलिए सब केलिए एक ही सत्य नहीं हो सकता। अपने–अपने निजी अनुभवों के कारण सबके अलग–अलग सत्य हैं। किसी एक का मूल्य किसी दूसरे का मूल्य नहीं हो सकता। फिर भी मानव समाज में मानव द्वारा निर्मित मूल्य है। इन मूल्यों को आधार बनाकर मूल्य विघटन पर विचार करते हैं। आधुनिकता का संचरण भी मूल्य विघटन का कारण माना गया। पुराने आदर्श और नयी मान्यताएँ जब अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आमने–सामने आते हैं तब 'मूल्य संक्रमण' की स्थिति होती है। मूल्य संक्रमण की अवस्था में पुराने मूल्यों पर आस्था समाप्त हो जाती है, नए मूल्य वहाँ स्थापित होने की स्थिति में होते है। पर मानव उन्हें भी अपना नहीं पाता। यह है मूल्य संक्रमण की स्थिति। जो भी हो परिवर्तन मानव जीवन की अनिवार्यता है। इसे स्वीकार करना पड़ेगा।

साहित्य और मूल्यों का पारस्परिक संबंध :–

साहित्य का सृष्टा मानव है। साहित्य और मानव जीवन का तीक्ष्ण संबंध संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश की परंपरा में उपलब्ध हिन्दी साहित्य में देखा जा सकता है। वेदकाल में धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की प्रधानता रही। आदिकालीन सामंतवादी साहित्य में वीरता तथा श्रृंगार की प्रधानता है। सिद्धों, नाथों, जैन मुनियों के साहित्य ने आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों का समन्वय कर जीवन के उदात्त मूल्यों पर दृष्टिपात करता रहा। भक्तिकाल में भेद–भाव से उत्पन्न संगीर्णता को त्यागकर समन्वयात्मकता तथा धार्मिक मूल्यों के माध्यम से एक नयी दिशा निर्धारित की गयी। रीतिकालीन साहित्य ने तद्युगीन सामंती मनोवृत्ति तथा काव्यशास्त्रीय मूल्यों को हिन्दी में पहूँचाया। आधुनिक काल में रचनाकार धीरे–धीरे, जन–जीवन के पास आए तथा सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में मूल्य की स्थापना का प्रयास जारी है।

साहित्य पाठकों को जीवन–यथार्थ से जोड़ता है और नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करता है। अतः साहित्य के संदर्भ में जीवन मूल्यों को जानना आवश्यक है। आधुनिक युग अनेक प्रकार के संकटों से ग्रस्त है। साथ ही साहित्य भी इन संकटों को प्रतिपादित करते रहते हैं। साहित्य की पहचान का वास्तविक आधार आज भी मानव मूल्य ही है। यदि साहित्य जीवन मूल्यों से अलग हो जाए तो वह मनोरंजन का साधन मात्र रह जाएगा। साहित्य जिस प्रकार से विकसित हो रहा है उसी गति से मूल्य भी तेज़ी से बदलते हुए दिखाई दे रहे हैं। मुल्य विघटन की स्थिति आज मानव को तनाव में डाल रही है। उस स्थिति को महसूस कर साहित्यकार इसमें परिवर्तन लाने श्रेष्ठ मानव मूल्यों को रूपायित कर मानवता का संदेश देता है। साहित्य द्वारा मूल्यों में आनेवाले परिवर्तन के विषय में डॉ.रघुवंश का कथन है–"रचनाकार समाज की संपूर्ण व्यवस्था के विरुद्वखड़े होकर, उसके समस्त मूल्यों को नकारकर प्रतिष्ठित आदर्शों को चुनौती देकर भी अपनी रचना प्रक्रिया में किन्हीं न किन्हीं मूल्यों की भूमिका प्रस्तुत करता ही है।"[6] मानव मूल्यों की जगह आज का साहित्यकार बदलते मूल्यों को प्रस्तुत कर विषम स्थिति की ओर संकेत कर समाज को चेता रहा है और मूल्यों को पुनः स्थापित करने पर जोर दे रहा है। मोटे तौर पर कहें तो मानव मूल्य और साहित्य के बीच में घनिष्ठ संबंध है।

नवें दशक की हिन्दी कहानी में चित्रित मूल्य विघटन :–

सभी साहित्य विधाएँ, अपनी–अपनी शैली में मानव मूल्यों को प्रतिष्ठित करते–रहते हैं। अन्य विधाओं की तुलना में कहानी इस दायित्व के निर्वाह में सबसे अधिक सफल हुई है। प्रेमचन्द जी ने युगीन परिस्थितियों के परिवर्तन को अपनी कहानियों में चित्रित किया। उनकी आरंभिक कहानियों में नैतिक मर्यादाओं के प्रति आस्था देखने को मिलती है। लेकिन, अंतिम कहानियों तक आते–आते वह लुप्त हो गया। यश्पाल, अश्क, मन्मथ नाथ गुप्त, रांगेय राघव आदि कहानिकारों ने मार्क्सवादी विचारधारा को कहानी का विषय बनाया। जैनेन्द्र ने प्रेमचन्द की परंपरा से टकराकर हिन्दी कहानी को एक नयी दिशा में ले चलने की कोशिश की। उनकी कहानियों में मानव मन की गुत्थियों को सुलझाने का श्रम था। अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी और जैनेन्द्र ने कहानी को जिस दिशा में ले जाने की कोशिश की उसमें हिन्दी कहानी बहुत दूर तक नहीं जा पाया। सन साठ पश्चात, हिन्दी साहित्य में नव लेखन का दौर शुरू हुआ। सातवें और आठवें दशक तक आते–आते नव लेखन की विशिष्ट प्रवृत्तियों ने अपनी निश्चित सीमाओं व दिशाओं को निर्धारित की। कहानी के क्षेत्र में विविध आन्दोलनों का आगमन भी हुआ। बाद में इन आन्दोलनों का दौर थमने लगा तथा स्वतंत्र रूप से, जीवन को निकटता से देखने का श्रम हिन्दी कहानी करने लगा।

स्वतंत्रता पश्चात, समाज में एकदम परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हुई। फलतः परंपरागत मूल्यों में विघटन दिखाई देने लगा। नवें दशक में पदार्पण करते ही मानव मूल्यों में व्यापक विघटन का दौर शुरू हुआ। महानगरों का परिवेश, अमानवीयकरण, विसंस्कृतीकरण आदि से भर गया। समस्त जीवन मूल्यों में बहुस्तरीय विघटन सामने आने लगा। पारिवारिक संबन्धों में संवादहीनता, बिखराव, टूटन आदि का भरमार होने लगा। दफ्तरी एवं राजनीतिक परिवेश मांसाहारी हो गया, स्त्री–पुरुष कच्चे मांस की तृष्णा में भटकने लगे। सारी व्यवस्थाएँ एवं तंत्र प्रदूषित हो उठे। स्नेहहीनता, एकाकीपन, अजनबीपन आदि मानवीय रिश्तों के बीच उभरकर आये। ये व्यक्तियों को जीवन की व्यर्थ खामोशी में फेंकने लगे। कृष्णा अग्निहोत्री की राय में–"अजनबीपन की यह स्थिति हमारी स्वतंत्रता के बाद घने रूप में दिखाई पडती है। इसका कारण बढती हुई जनसंख्या, टूटते परिवार और आधारभूत बेमानी संस्थाएँ चारों ओर भीड होकर भी अपरिचय बढा हुआ है, क्योंकि हम भीड़ में चलते हैं, भीड में रहते हैं, भीड में सोते हैं और भीड़ में काम करते हैं। हर जगह किसी न किसी रूप में यह भीड़ कायम है। घर में बच्चों, बूढों की भीड़ और एक कमरे का घर, सड़क पर चलती हुई भीड़ और उस भीड़ में अपने को खो देने की नियति। आफिस के ऊपर आफिस और आफिस की मेजों पर झुकी हुई काली–काली मुण्ड़िका आदमी निर्णय नहीं कर पाता कि कौन सी मुण्ड़िका उनकी अपनी है, उसके आत्मीय की है। फलतरू हम भीड़ में जीने के लिए अभिशप्त है। अतरू हमारा अजनबीपन अति परिचय का अजनबीपन है।"[7] सारे संबन्धों से विच्छिन्न व्यक्ति अधिकाधिक अकेला और अजनबी होता चला गया। अजनबीपन, आत्मनिर्वासन की स्थिति है। अजनबीपन का एक कारण व्यवहार की कृत्रिमता भी है। व्यवहार की इस कृत्रिमता के कारण व्यक्ति पहले परिवार से और अंततः अपने आप से अजनबी हो जाता है। संपूर्ण वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक विघटन को नवें दशक के कहानीकारों ने अपनी कहानियों का कथ्य बनाया। नयी और पुरानी पीढी के संघर्ष को भीष्म साहनी की 'कटघरे, शशि प्रभा शास्त्री के कहानी संग्रह 'अनुत्तारित' आदि की कहानियों में हम देख सकते हैं। मेहरुन्नीसा परवेज की कहानी 'ज़माना बदल गया है' बदले हुए जीवन मूल्यों की वकालत करती है और पुरानी पीढ़ी की संशोधन की माँग करती है।

नवें दशक के कहानीकारों ने नारी शोषण के विविध आयामों को पकडा है। मंजुल भगत की 'शुभ–अशुभ', मृदुला गर्ग की 'वह मैं ही थी' कहानियाँ इस तथ्य को रेखांकित करती है कि नारी दुर्दशा का कारण उसका परावलंबी होना है। इन्द्रावली की 'शिवनेत्र' ज्ञानप्रकाश विवेक की 'जलजला' कहानियों में यौन शुचिता के नाम पर युगों से पुरुष अत्याचार झेलती आ रही नारी के उठ खडे होने की अभिव्यक्ति हुई है। इन परिवर्तित परिस्थितियों में नारी ने परिवार के बीच पुरुष के प्रभुत्व को चुनौती दी है। चुनौती की यह झलक नवें दशक की कहानियों का कथ्य बनी है। ममता कालिया के कहानी संग्रह 'प्रतिदिन' की कहानियाँ इस कटु सत्य को संप्रेषित करती हैं कि तमाम नारी स्वातंत्र्य की दुहाई है और श्रम के बावजूद भी नारी अभी यातना और मानसिक पीड़न से मुक्त नहीं है। नवें दशक की कहानी ने मानव–ज़िन्दगी में निहित अंतर्विरोध, संक्रांति आदि को पकड़ने की कोशिश की है। ऐसी कहानियों में सुधा अरोड़ा की कहानी एक 'मैली सुबह', कृष्णा अग्नि होत्री के कहानी संग्रह 'नपुंसक' आदि प्रमुख हैं। सामान्य जीवन में अधुनिकताबोध ने नारी जीवन को सोचने की नयी दिशा दी है। परिणाम स्वरूप 'पतिव्रत' का वह भारतीय आदर्श तोड़ चुका है। प्राचीन व्यवस्था के प्रति उसका मोह और आस्था खो चुका है। इसी मोहभंग को केन्द्र में रखकर लिखी गयी नवें दशक में अनेक कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियों में मेहरुन्नीसा परवेज़ की 'कोई नहीं', मंजुल भगत की 'पायदान' आदि आती हैं। इनमें मोहभंग और निराशा का तीखा अंकन हुआ है।

आधुनिकताबोध के अंतर्गत अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव से अनास्था, असुरक्षा का भाव और मृत्यु बोध की बात की जाती रही है। निर्मल वर्मा की 'कुत्ते की मौत', रवीन्द्र कालिया की 'त्रास' में मृत्यु बोध की छाया विद्यमान है। अकेलापन की समस्या से भी कई कहानियाँ जुड़ी हैं। उषा प्रियंवदा की कहानी 'छुट्टी का दिन', ममता कालिया की 'जिन्दगी के सात घण्टे' आदि में अकेलापन कई तरह से चित्रित हुआ है। आधुनिक जीवन की यांत्रिकता और औद्योगीकरण के प्रभाव से जीवन में घुले अकेलापन को कुसुम बंसल की 'स्पीड़ ब्रेकर', सुमती अय्यर की 'सुबह दर सुबह' आदि कहानियाँ अभिव्यक्त करती हैं। समाज के भ्रष्टाचार, पारिवारिक संबन्धों में संवादहीनता, टूटते जीवन मूल्यों के कारण आयी असुरक्षा की भावना को निर्मल वर्मा की 'कब्बे और कालापानी', प्रणव कुमार श्रीवास्तव की 'पार' आदि कहानियाँ अभिव्यक्त करती हैं। पारिवारिक संबन्धों में संवादहीनता का प्रसार तेज़ी से बढा है। अनेक कारणों से दाँपत्य जीवन की टूटन को आलोच्य कहानियों ने चित्रित किया है जैसे –रामदरश मिश्र की कहानी 'अतीत का दर्द'। नारी चेतना के विकास के कारण, आधुनिक युग में विवाह संस्था से जुडी जन्म–जन्मांतर के संबन्धों की कल्पना का अब कोई मूल्य नहीं है। राजी सेठ की 'तीसरी हथेली' की कहानियाँ, श्रीकांत वर्मा की 'बड़ी कहानियाँ' विवाह संस्था की परंपरागत आस्था को खण्ड़ित करने वाली कहानियाँ हैं। शारीरिक भूख की तृप्ति की तलाश, नवें दशक की कहानियों में, केवल दाँपत्य के बीच ही नहीं अपितु विवाह से पूर्व ही इस तलाश का सिलसिला इन कहानियों में दिखाई देता है। रामकुमार की कहानी 'समुद्र', सोमावीरा की 'एक संबोधन' युवक–युवतियों के विवाह पूर्व यौन संबन्धों की कहानियाँ है तथा मेहररुन्नीसा परवेज की 'फालगुनी', मन्नुभण्डारी की 'एक कमज़ोर लडकी की कहानी' विवाह पूर्व प्रेम संबन्धों की अरोचक परिणाम वाली स्थितियों को सामने लाती हैं। अविवाहित प्रेम संबन्धों की तरह विवाहोपरांत प्रेम संबन्धों से भी कई कहानियाँ जुड़ी हैं। मृदुला गर्ग की 'कितनी कैदें', शानी की 'आने वाली दुनिया' आदि कहानियाँ विवाहोपरांत स्त्री के बुरे आनंद की तलाश की कहानियाँ हैं। प्रेम विवाह के गुण और दोष दोनों परिणामों को सामने लाने वाली कहानियाँ भी नवें दशक में लिखी गयी है। अखिलेश की 'शताब्दि के अंतिम दौर में एक प्रेम', अमृतलाल नागर की 'संजोग' अदि कहानियाँ प्रेम विवाह की विभिन्न स्थितियों को सामने लाती हैं। इसी प्रकार नवें दशक की हिन्दी कहानियाँ व्यापक स्तर पर स्त्री–पुरुष संबन्धों का विश्लेषण करती हैं। नवें दशक की हिन्दी कहानियों में पारिवारिक स्तर पर कहानिकारों ने बदलते जीवन मूल्यों को अनेक कोणों से रेखांकित किया है। इन कहानियों का पारिवारिक परिवेश टूटा और संवादहीन दिखायी देता है।

राजनीतिक प्रदूषण भारतीय जीवन में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय नैतिकता के अवमूल्यन तथा नेताओं की दुराचरण की छाया आदि नवें दशक की हिन्दी कहानियों में दिखाई देते हैं। नरेश मेहता की 'एक समर्पित महिला', मणि मधुकर की 'अपने रणक्षेत्र' आदि कहानियों में इन स्थितियों को रेखांकित किया गया है। शराब, रिश्वत और लडकी आज की राजनीति के आम विषय बन गये हैं। इस राजनीतिक कुत्सा को जीवन सिंह की 'जीपों वाला घर', अनिल श्रीवास्तव की 'घरानेदार लडकियाँ' आदि कहानियाँ प्रामाणिकता से सामने लाती हैं। नये संबन्ध और परिवर्तन की प्रक्रिया को आर्थिक कारणों ने बहुत तीव्र किया है। बदलते संबन्धों का आर्थिक परिवेश बहुत कुछ जिम्मेदार है। इसलिए व्यक्ति संबन्धों में तनाव, औपचारिकता, ठण्ड़ापन, हताशा, विरक्ति और टूटन की प्रक्रिया आरंभ हो गयी है। राम जायसवाल के कहानी संग्रह 'असुरक्षित' की कहानियाँ साधारण आदमी के परिवार और उसके अभावों की कहानियाँ है। नवें दशक के कहानीकार ने आज की व्यापक मूल्यहीनता को विविध आयामों में चित्रित किया है। कृष्णा अग्निहोत्रि के शब्दों में–"आज जो जीवन हम जी रहे हैं, घुटन और आत्मपीडन की जिस स्थिति का अहसास हम कर रहे हैं, निर्माण प्रगति और निराशा की जो भावनाएँ हमें ढोनी पड़ रही है, सामाजिक यथार्थ की कटुता एवं सत्यता की भयंकरता जिस प्रकार हमें निश्चेष्ट या दिशोन्मुख कर रही है, आज की कहानी इन सभी स्थितियों की कार्बन कापी है।"[8] नवें दशक के कहानीकारों ने ग्रामीण, नगरीय एवं महानगरीय जीवन की परिवर्तित सामाजिक स्थितियों, दशाओं तथा संबन्धों को चित्रण किया। विवेकी राय ने 'बेटे की बिक्री' शीर्षक कहानी में गाँव के आर्थिक शोषण, भ्रष्टाचार, ऊँच–नीच, जातिवाद आदि स्थितियों को दर्शाया है। ग्रामीण जीवन के समान अनेक रचनाकारों ने नगरीय और महानगरीय जीवन पर अपने सृजन को केन्द्रित किया। ऐसे रचनाकारों में सुधा अरोड़ा ('महानगर की मैथिली'), राजी सेठ ('तीसरी हथेली') प्रमुख हैं। रेणु के कहानी संग्रह 'एक श्रावणी', 'दोपहर की धूप' आदि महानगरीय परिवेश में दाँपत्य जीवन के एक विशिष्ट पक्ष से संबन्धित है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय परिवेश में बड़ी तेजी से विकास हुआ। अनेक विकास योजनाओं ने जहाँ मनुष्य के विकास के द्वार खोले

वहाँ उसे अनेक विकृतियों का उपहार भी दिया। मनुष्य एकदम महत्वाकांक्षी हो उठा, जिसकी पूर्ती के अभाव में अनेक कुण्ठाओं ने उसे त्रास देना शुरू किया। मूल्य–विघटन से चारित्रिक पतन के नंगे परिदृश्य सामने आये। बदलते परिवेश ने व्यक्ति संबन्धों को एक नया रूप दिया। बदलते हुए पारिवारिक, सामाजिक वातावरण में जो संबन्ध विकसित हुए उनमें अनेक प्रकार की घुटन, कुण्ठाएँ, ऊब एवं संत्रास का हलाहल मिला हुआ था। स्थापित नैतिक बोध का बहुस्तरीय विघटन नवें दशक की कहानियों में एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में उभरा है। इस विघटन को लेकर लिखी गयी कहानियों में गिरिराज किशोर की कहानी 'चूहे' और 'पेपर वेट', महीप सिंह की 'लवर्ज' आदि उल्लेखनीय हैं। इस दशक के कुछ कहानीकारों ने यौन संबन्धों का नग्न चित्रण किया है। ऐसे कहानकिारों में राजकमल चौधरी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनका 'मछली जाल', शिवानी की 'ऊँचाई' आदि कहानियाँ इसी कोटी की हैं। अन्विता अग्रवाल की 'कटी हुई तारीखें' कहानी कुंठाग्रस्त लड़कियों पर केन्द्रित है। नरेन्द्र कोहली की 'सार्थकता', श्रीकांत वर्मा की 'मिचली' कहानियों में यह कुण्ठा यौन जनित है। वस्तुतः कुंठा और संत्रास आज के जीवन की वास्तविक सच्चाई भी है। निरुपमा सेवती का कहानी संग्रह 'खामोशी को पीते हुए' की कहानियाँ मन की गुत्थियों को सुलझाने में रुचि लेती हैं। देवेन्द्र इस्सर की कहानी 'पुरानी तस्वीर और नये रंग' एवं 'एक शाम और वह आदमी' का परिवेश अकेलापन, भय, निरर्थकता, संत्रास, टूटन और तनाव से जुडा है। मंजुल भगत की कहानी 'खोज' की नीलिमा का सारा संकट स्वयं अपने की तलाश की है। नवें दशक की कहानियों से गुज़रते हुए यह निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि, मानव मूल्यों में जो विघटन समाज में हो रहा है, उन सब परिवर्तनों को रचनाकारों ने बड़ी सूक्षमता से अनुभव किया तथा अपने इन अनुभवों को कहानी में तीक्ष्ण रूप से चित्रित भी किये हैं।

निष्कर्ष :–

1ण मूल्य विघटन से समाज में उत्पन्न सबसे बड़ा खतरा अकेलापन है।
2. मूल्य विघटन के सबसे प्रमुख कारण विज्ञान, नगरीकरण, आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, भूमंड़लीकरण आदि है।
3. मूल्य रहित समाज को सही रास्ते पर ले जाने में, नवें दशक के कहानीकारों ने अपनी कहानियों के उपयोग की हैं।
4. नवें दशक की कहानियाँ, बदलते जीवन मूल्यों से उत्पन्न विकृत सामाजिक परिवेश की तिक्त यथार्थ को प्रस्तुत की हैं।
5. कहानीकारों ने समाज में व्याप्त अकेलापन, घुटन आदि समस्याओं को अपनी रचनाओं के विषय बनाने में काफी सफल हुए हैं।

उपसंहार :–

मोटे तौर पर कह सकते है कि, समाज में जो कुछ घटित हो रहा है उसका यथार्थ चित्रण करना कहानीकारों का दायित्व बन गया है। मानव समाज से लेकर, मानव मन तक की सारी समस्याओं को नवें दशक के कहानीकारों ने गहरी सूक्ष्मता से अनुभव किया है। उनकी कहानियों में मानव मूल्यों के विघटन से जीवन में उत्पन्न अनेक परिणामों का दीदार होता हैं। मनुष्यता को बचाने का तीक्ष्ण श्रम कहानियों की खासियत हैं। विज्ञान ने आज मनुष्य के बीच की दूरी कम कर दिया है। किंतु मानवीय संबंधों की दूरी प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। यह दूरी मानव को धीरे–धीरे अमानव बना दिया है। नवें दशक के कहानीकारों ने यह अमानवीयता का चित्रण मानवीयता के ज़रिए किए हैं। समाज में मानव–मूल्यों को बनाये रखने के लिए नवें दशक के सभी कहानीकारों ने अपनी–अपनी भूमिका जरूर निभाये हैं।

संदर्भ ग्रंथसूची :–

(1). बोधा के काव्य में जीवन मूल्य ,पृ–सं–24, वेदप्रकाश, संजय प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2002
(2). वही ,पृ–सं–24
(3). साहित्य की सामाजिक भूमिका ,पृ–सं–63, देवेश ठाकुर, संकलप प्रकाशन, मुम्बई।
(4).रामचरित मानस में जीवन मूल्य, पृ–सं–28, डॉ.अमिता रानी सिंह, जयभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण–1993
(5). रांगेय राघव के उपन्यासों में मूल्य, पृष्ठ–सं–10, डॉ.सुनीता बानी, विकास प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2007
(6). आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, पृ–सं–30, डॉ.रमेश देशमुख, विद्या प्रकाशन, प्रथम संस्करण –1994
(7).श्रीकांत वर्मा की कहानियों में यथार्थ बोध ,पृ सं–43, प्रो.रामचन्द्रमाली, अमन प्रकाशन, प्रथम संस्करण–1998
(8). वही ,पृ.सं–64

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal

For All Subjects

Dear Sir/Madam,

We invite original unpublished research paper. Summary of Research Projetc, Theses, Books and Books Review of publication, You will be pleased to know that our journals are..

Associated and Indexed, India

- *OPEN J-GATE*
- *International Scientific Journal Consortium Scientific*

Associated and Indexed, USA

- Google Scholar
- DOAJ
- EBSCO
- Index Copernicus
- Academic Journal Database
- Publication Index
- Scientific Resources Database
- Recent Science Index
- Scholar Journals Index
- Directory of Academic Resources
- Elite Scientific Journal Archive
- Current Index to Scholarly Journals
- Digital Journals Database
- Academic Paper Database
- Contemporary Research Index

Indian Streams Research Journal
258/34, Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact:- 9595359435
E-Mail- ayisrj@yahoo.in / ayisrj2011@gmail.com
Website:- www.isrj.net